In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

॥ श्रीः ॥

शतकत्रयमंजरी ।

अर्थात् भर्तृहरिशतकत्रयभाषा छंदोक्त दोहा, सोरठा, छप्पय, कुंडलिया आदिमें रचित ।

श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई जयपुर-राज्यनरेश श्रीप्रतापसिंहजी वीरेशविरचित ।

आगरानिवासी राधाकृष्णमिश्रने शोधन किया ।

जिसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५८, शके १८२३.

कल्याण मुंबई.

इस पुस्तकका रजिष्टरी सब हक्क सन १८६७ के ऍक्ट २५ के बमुजब यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

श्रीमन्महाराजाधिराजश्रीसवाईप्रतापसिंहवीरेशकृत

नीतिमंजरी।

छप्पय–जाकी मेरे चाह वहै मोसों विरक्तमन ।
और पुरुषसों प्रीति पुरुष वह चहत और धन ॥
मेरे कृतपर रीझ रही कोऊ इक औरहि ।
यह विचित्र गति देखि चित्र ज्यों तजत न ठौरहि ॥
सब भांति राजपत्नीसु धिक जारपुरुषको परम धिक ।
धिक काम याहि धिक मोहि धिक अब व्रजनिधि शरण इक॥ १ ॥

दोहा–सुखकारि मूढ रिझाइये, अतिसुख पंडितलोग ।
अर्द्धदग्ध जड जीवको,विधिहि न रिझवन योग ॥ २ ॥

छप्पय–निकसत वारू तेल यतन करि काढत कोऊ ।
मृगतृष्णाको नीर पिये प्यासो है सोऊ ॥
लहत ससाको शृंग ग्राहमुखतें मणि काढत ।
होत जलधिके पार लहर जब जाकी बाढत ॥
रिस भरे सर्पको पहुप ज्यों अपने शिरपर धरि सकत ।
हठ भरे महाशठ नरनको कोऊ वश नहिं कारि सकत ३॥

कुंडलिया–फीको है शशि दिवसमें कामिनि योवनहीन ।
सुंदर मुख अक्षर विना सरवर पंकजछीन ॥
सरवर पंकजछीन होत प्रभु लोभी धनको ।
सज्जन कपटी होत नृपति ढिग वास खलनको ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ऐसो तो है शल्य मरम छेदत या जीको ।
ब्रजनिधि इनको देखि होत मेरो मन फीको॥ ४ ॥
छोटीहू नीकी लगे मणि खर सान चढीसु ।
वीर अंग कटि शस्त्रसों शोभा सरस बढीसु ॥
शोभा सरस बढीसु अंग गज मद कारि छीनहिं ।
द्वैज कला शशि सोहि शरद सरिता जिमि हीनहिं ॥
सुरत दलमली नारि लहत सुंदरता मोटी ।
अर्थिनको धन देत घटी सो नाहिं न छोटी ॥५॥

दोहा—जाको जब मुष्टी नहीं, होत वहै नृपराज ।
छोटे मोटे होत सब, शोच गर्व नहिं काज ॥ ६ ॥

छप्पय—ग्रंथनको ज्ञान मधुर वाणी जिनके मुख ।
नितप्रति विद्या देत सुयशको पूरि रह्यो सुख ॥
ऐसे कवि जिहिं देश वसत निर्धनता लहि अति ।
राज नाहिं प्रवीण भई याहीतें यह गति ॥
वे हैं विवेक संपतिसहित सब पुरुषनमें अतिहि वर ।
घटि कियो रतनको मोल जिन तेई जौंहरी कूर नर७॥

दोहा—विपति धीर संपति क्षमा, सभामाहिं शुभ वैन ।
युधि विक्रम यशमाहिं रुचि, ते नर निर्गुण ऐन ॥ ८ ॥

छप्पय—नीतिनिपुण नर धीर वीर कछु सुयश करो किन ।
अथवा निंदा कोटि कहो दुर्वचन छिनहिं छिन ॥
संपतिहू चलि जाहु रहो अथवा अगनित धनु ।
अबहि मृतक किन होहु होहु अथवा निश्चल तनु ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

परन्याय पंथको तजत नहिं बुध्र विवेक गुण ज्ञाननिधि।
यह सँग सहायक रहत नित देत लोक परलोक सिधि९

कुंडलिया—पंडित परअर्थीनको नहिं करिये अपमान।
तृणसम संपतिको गिने वश नहिं होत सुजान॥
वश नहिं होत सुजान पटा झर मद है जैसे।
कमलनालके तंतु बँधे रुकि रहि हैं कैसे॥
तैसे इनको जान सबहि सुखशोभा मंडित।
आदरसों वश होत मस्त हाथी ज्यों पंडित॥१०॥

छप्पय—चोरि सकत नहिं चोर भोर निशि पुष्ट करत हित।
अर्थिनहूंको देत होत छिन छिनमें अगिनित॥
कबहूं विनसत नाहिं लसत विद्या सुगुप्त धन।
जिनके यह सुख साज सदा तिनको प्रसन्न मन॥
राजाधिराज छिति छत्रपति यह एतौ अधिकार लहि।
उनको निहारि दृग फेरिवो यह तुमको है उचित नहिं११

कुंडलिया—नाहर भूखो उदर क्रम वृद्धि वैस तन छीन।
शिथिल प्राण अतिकष्टसों चलिवेहीमें लीन॥
चलिवेहीमें लीन तऊ साहस नहिं छांडै।
मदगजकुंभ विदारि मांस भक्षण मन मांडै॥
मृगपति भूखो घास पुरानो खात न जाहर।
अभिमानिनमें मुख्य शिरोमणि सोहत नाहर १२॥
मांगे नाहिं न दुष्टतें लेत मित्रको नाहिं।
प्रीति निवाहत विपतिमें न्यायवृत्ति मनमाहिं॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

न्यायवृत्ति मनमाहिं उच्च पद प्यारो जिनको ।
प्राणनहूके जात अकृत भावत नहिं तिनको ॥
खङ्गधार व्रत धारि रहे क्योंहूं नहिं त्यागे ।
संतनको यह मंत्र दियो कोने विन मांगे ॥ १३ ॥

दोहा—अमृतभरे तन मन वचन, निशि दिन जग उपकार ।
परगुण मानत मेरुसम, विरले जन संसार ॥ १४ ॥

छप्पय—इस सोवत श्रीकृष्ण इतै वैरी दानवगन ।
इतको गिरिवर वृंद सरन सोवत निर्भय मन ॥
इतको पांडव अगिन रहत जलमाहिं निरंतर ।
मच्छ कच्छ इत्यादि रहत सुखसों सब जलचर ॥
अतिहि अगाध ऊंचो अधिक सहनशील ताकी अधिक ।
विस्तार अमित कहिये कहा अद्भुत गति राखत उदधि॥ १५

दोहा—भूमिशयन कहुँ पलँगपै, शाकहार कहुँ मिष्ट ।
कहुँ कंथा शिर पांव कहुँ, अर्थी सुख दुख इष्ट ॥ १६ ॥

छप्पय—बडो भूमि विस्तार सिंधु सीमा करि राखी ।
सिंधु चारसै कोश अवधि एती कछु भाखी ॥
बहुत बडो आकाश ताहि रवि नितप्रति नापत ।
रविहूको रथ राहु आप अपने बल दापत ॥
सबकी मर्याद देखी सुनी यदपि बडाईहू सहित ।
यह एक बुद्धि विस्तार विधि सिद्धि परम सीमारहित॥ १७॥

दोहा—वंदित सबही सुरनको, विधिहूको दंडोत ।
कर्मनको फल देत ये, इनको कहा उदोत ॥ १८ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

लोभ संतोष न दूर है, श्रमसों कौन सुमेरु।
याकी महिमा याहिमें, विधि कीन्हो कह हेरु ॥ १९ ॥

छप्पय–कुत्सित मंत्री भूप संतविन सत् कुसंगतें।
लाड लडाये पूत गोत कन्या कुढंगतें ॥
विन विद्यातें विप्र शील खलसंग लियेतें।
होत प्रीतिको नाश वास परदेश कियेतें ॥
वनिता विनाश मद हाससों खेती विन देखे दृगन।
सुख जात अनय अनुरागतें अतिप्रमादतें जात धन॥२०॥
लज्जायुत जो होय ताहि मूरख ठहरावत।
धर्मवृत्ति मन ताहि ज्ञान दंभी कहि गावत॥
अतिपवित्र जो होय ताहि कपटी कहि बोलत।
धरै सूरता अंग ताहि पापी कहि तोलत॥
विक्रमहि मत्त प्रिय वचनरत तेजवान लंपट कहत।
पंडित लवार कहुँ दुष्टजन गुणको तजि औगुण गहत॥२१॥
जाति रसातल जाहु जाहु गुण ताहूके तर।
परो शैलपर शील अग्निमें जरो सुपरिकर॥
सूरा तनके सीस वज्र वैरिनको वरसहु।
एक द्रवहु बहु भांति रैन दिन घन ज्यों सरसहु॥
जेहि विना सकल गुण तृणहि सम कछु कारज नहिं कर सकहिं।
कंचन अधीन सबसों जे सुख विन कंचन जग अकबकहिं॥२२॥

कुंडलिया–जैसे काहू सर्पको छवरे पकरि धरचोसु।
वनमाहीं मेल्यो सुबह दे शिर फूटि परचोसु॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दे शिर फूटि परथ्योसु भयो पीडित अति कैदी।
इन्द्री विह्वल भूख पिटारी मूसे छेदी॥
वाहीको भखि मास छेद ह्वै निकस्यो ऐसे।
मनको तू थिर राखि करें प्रभु ऐसे जैसे॥२३॥

दोहा—करको मार्‍यो गेंद ज्यों, लागि भूमि उठि आत।
साधु सबनकी त्यों विपति, छीनहीमें मिटि जात॥२४॥
जैसे कंदुक गिर उठै, त्यों नरवर छिन दुख्य।
पापी दुखसों उठत नहिं, रेत पिंड ज्यों मुख्य॥२५॥
पुत्रचरित तिय हित करन, सुख दुख मित्रसमान।
मनरंजन तीनों मिले, पूरव पुण्यहि जान॥ २६ ॥

सोरठा—सतपुरुषनकी रीति, संपतिमें को नेह मन।
देखेहीमें कुरीति, वज्रसमानहिं होत तन॥ २७ ॥
विद्यायुतहू होय, तऊ दुष्ट तजि दीजिये।
सर्प जो मणिधर कोय, भयकारी कह कीजिये॥२८॥

कुंडलिया—पानी पयसों मिलतही जान्यों अपनो मित्त।
आप भयो फीको वहै जलको कियो सुचित्त॥
जलको लियो सुचित्त तत्त पयको जब जानी।
तब अपनो तन वारि वारि मन प्रीतहि आनी॥
उफनि चल्यो मधि अग्नि शांति जल छिरकत ठानी।
सतपुरुषनकी प्रीति रीति ज्यों है पय पानी॥२९॥

छप्पय—करत साधुको दुष्ट मूढ पंडित ठहरावत।
करत मित्रको शत्रु अमृतको विषय बनावत॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नृपतिसभाको नाम शक्ति या देवी कहिये।
ताकी सेवा किये सकल सुख संपति लहिये॥
यह जो प्रसन्न ह्वै है नहिं तो गुण विद्या सब अफल।
सुनि बात चतुर नर तू यहै वाहीसों ह्वै है सफल॥ ३०॥

कुंडलिया—कूकर सिर कीरा परे गिरत बदनतें लार।
बुरी वास विकाल तन बुरो हाल बीमार॥
बुरो हाल बीमार हाड सूके को चावत।
सुरपतिहूकी संक नेकहू करत नसावत॥
निडर महा मनमाहिं देखि घुर्रावत हूकर।
तैसेही नर नीच निलज डोलत ज्यों कूकर॥ ३१॥

कूकर सूके हाडसों मानत है मद मोद।
सिंह चलावत हाथ नहिं गीदर आये गोद॥
गीदर आये गोद आंखिहू नाहिं उघारै।
महामत्त गज देखि दौरिके कुंभ विदारै॥
ऐसेही नर खडे बडो कृत करत दुहूं कर।
करै नीचता नीच कूर कुत्सित ज्यों कूकर॥ ३२॥

दोहा—पाप निवारत हित करत, गुण गनि औगुण ढांकि।
दुखमें राखत देत कछु, सामंत्रन ये आंखि॥ ३३॥
माहीं जलमृगके सबन, सज्जन हितकर जीव।
लुब्धक धीमर दुष्ट जन, विन कारण दुख कीव॥ ३४॥

सोरठा—तबै बुंद ह्वै पीन, कमलपत्र जे सरस हैं।
मुक्ता सीपहि कीन, थान मान अपमान है॥ ३५॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कमल न डारै खोय, कोप करै विधि हंसपै ।
पय पानीसँग होय,जुदे करै लैं सकत नहिं ॥ ३६ ॥
दोहा–विधिको कियो कुम्हार जिन, हरिको दश अवतार।
भीक मँगावत ईशको, ऐसो कर्म उदार ॥ ३७ ॥
पहुँप गुच्छ शिरपै रहै, कै सूखे वनमाहिं ।
मान ठौर सतपुरुष रहि, कै सुख दुख घनमाहिं ॥ ३८
चुप गूगोला परवचन, निकट दीठ ज्यों दूर ।
क्षमा दीन परिहार खल,सेवा कष्टहि पूर ॥ ३९ ॥
छप्पय–नीचे ह्वैके चलत होत सबसे ऊंचे अति ।
परगुण कीरति करत आप गुण ढांकत यह मति ॥
आपन अर्थ विचार करत निशि दिन परमारथ ।
दुष्ट दुर्वचन कहत क्षमा करि साधत स्वारथ ॥
नित रहत एक रस सबसों वचन कोप करि कहत नहिं ।
ऐसेजु संत या जगतमें पूजावत सबके सुलहिं ॥ ४० ॥
भयो लोभ मनमाहिं कहा तब औगुण चहिये ।
निंदा सबकी करत तहां सब पातक लहिये ॥
सत्य वचन तप जानि शुद्ध मन तीरथ जानहु ।
होत सुयशता जहां तहां गुण प्रगट प्रमानहु ॥
यश जहां कहा भूषण चहै सद्विद्या जहां धन कहा ।
अपयशजु छयो या जगतमें तिन्हैं मृत्युही है महा ४१
टांट उघारें मूढ बारहू शिरपर नाहीं ।
तप्यो ज्येठको घाम वेलकी पकरी छाहीं ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तहां बेलफल एक्क शीसपर परचो सुवाके ।
फूटि गयो करि सोर पीर बाढी तनु ताके ॥
सुख ठौर जानि विरम्यो सुवश तहां इते दुखको सहत।
निर्भाग्य पुरुष जित जास तिस वैर विपति अगिनित लहत॥४२

दोहा—विद्या आकृति शील कुल, सेवा फल नहिं देत ।
फलत कर्महूं समयपै, ज्यों तरु फलत समेत ॥ ४३ ॥

कुंडलिया—मंडन है ऐश्वर्यको सज्जनता सनमान ।
वानी सज्जन सूरता मंडन धनको दान ॥
मंडन धनको दान ज्ञान मंडन इंद्री दम ।
तप मंडन आक्रोश विनय मंडन सोहत सम ॥
प्रभुता मंडन माफ धर्म मंडन छल छंदन ।
सबहिनमें सरदार शीलता सबको मंडन॥ ४४ ॥

छप्पय—उत्तम नरपर अर्थ करत स्वारथको त्यागत ।
धारण परको अर्थ करत स्वारथ अनुरागत ॥
दुष्ट जीव निज काज करत परकाज बिगारत ।
वे नहिं जाने जात रूप चौथो जे धारत ॥
जिनको न होत निज काज कछु औरनके स्वारथ हरत।
तिनको न दरश छिन देहु प्रभु बात सुनतही चित डरत ॥४५॥

दोहा—जडताई मतिकी हरत, पाप निवारत अंग ।
कीरति सत्य प्रसन्नता, देत सदा सतसंग ॥ ४६ ॥

कुंडलिया—जाने परके गुण सबै महत पुरुषको संग ।
विद्या अपनी भार्या तिनमें मनको रंग ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तिनमें मनको रंग भक्ति शिवकी दृढ राखें ।
गुरुआज्ञामें नम्र रहै दुष्टन सँग भाखें ॥
ब्रह्मज्ञान चितमाहिं दमन इंद्रिन सुख माने ।
लोकवादकी संक पुरुषते भूषण जाने ॥ ४७ ॥

छप्पय–ज्यों दर्पण प्रतिबिंब हाथमें आवत नाहीं ।
त्यों नारिनको हृदय कठिन ऊपर अरु माहीं ॥
दुर्गम गिरिसम भाव विषम जानत नहिं कोऊ ।
कमलपत्रपर चपल जलहि त्यों चित गति सोऊ॥
सब नारि नाम इनको कहत विष अंकुरकी वेलि यह ।
निसि द्योस दोषमय देखियत कहा कहों अतिही अगह॥४८॥

तृष्णाको तजि देहु क्षमाको भजन करो नित ।
दया हियेमें राखि पापसों दूरि राखि चित ॥
सत्य वचन मुख बोलि धर्मपद्वी जिय धारहु ।
सतपुरुषनकी सेव नम्रता अतिविस्तारहु ॥
सब गुणसु आपने गुप्त करि कीरति परिपालन करहू ।
करि दया दुखित नर देखिके संतरीत यह अनुसरहू॥४९॥

भयो संकुचित गात दंतहू उगरि परे महि ।
आंखिन दीखत नाहिं वदनतें लार परत बहि ॥
भई चाल बेचाल हाल बेहाल भयो अति ।
वचन न मानत बंधु नारिहू तजी प्रीति गति ॥
यह कष्ट महा दिय वृद्धपन कछु मुखसों नहिं कहि सकत
निज पुत्र अनादर करि कहत यह बूढो योंही बकत ॥५०॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दोहा–हाड देखिके तजति तिय, ज्यों कोलीको कूप।
त्योंही धौरे वार लखि; बुरो लगति है रूप॥ ५१॥
कारज आछो अरु बुरो, कीजै बहुत विचारि।
विना विचारे करतही, होत रारि अरु हारि॥ ५२॥

छप्पय–चरी लसनियां माहिं तिलनकी खलको रांधत।
आक रुईके हेत पुहुमि कंचन हल सांधत॥
कोदों निपजन काज खेत घनसारहि डारत।
तैसेही नरदेह पाय विषया विस्तारत॥
यहि कर्म भूमिको पाय करी जे नहिं जप तप व्रत करहिं।
ते मूढ महानर जगत्में पापमोट सिरपर धरहिं॥ ५३॥

दोहा–वन रण अरु जल अग्निमें, गिरि समुद्रके मध्य।
निंदा मद ठौरहि कठिन, पूरव पुण्यहिं सध्य॥ ५४॥

कुंडलिया–सेवहु केशव यत्नसों कै शिवकी करि सेव।
मित्र एक करि नृपतिको कै योगेश्वर देव॥
कै योगेश्वर देव दुहुनमें एकहि तू करि।
करिये नगर निवास किधों वनवास करहु ढरि॥
पुत्रवती तियसंग अंग अंगन भोंटे बहु।
करि गिरि गुहा प्रसंग प्रीतिसों नितप्रति सेवहु॥ ५५॥

दोहा–वन पुर ह्वै जग मित्र ह्वै, कष्ट भूमि ह्वै रत्न।
पूरव पुण्यहि पुरुषके, होत इते विनयत्न॥ ५६॥
बूडि समुद्र अरु मेरु चढि, शत्रु जीत व्योपार।
खेती विद्या चाकरी, सबमें भावी सार॥ ५७॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुंडलिया–हिमगिरि सिर धुनिके कहत कहा कियो मैनाक।
सहिवो हों निज सीसपै इंद्र वज्र परिपाक ॥
इंद्र वज्र परिपाक अग्निज्वालामें जरिवो।
नीको हो सब भांति वहां सन्मुख ह्वै मरिवो ॥
दुरयो सिंधुके माहिं कहो कहांलौं ह्वै है थिर।
निलज लजायो मोहि पिता नहिं जान्यों हिमगिर॥५८

छप्पय–सुरगुरु सेनाधीश सुरनकी सेना जाके।
शस्त्र हाथ लिये वज्र स्वर्गसों दृढ गढ ताके ॥
ऐरावति असवार प्रभूको परम अनुग्रह।
एती संपतिसों न सहित सोहत सुइंद्र यह ॥
सो युद्धमाहिं दानवनसों लहत पराजय खोय पति।
शोभा समाज सबही वृथा सबसों अद्भुत दैवगति॥५९॥

दोहा–फलहू पावत कर्मतें, बुधहू कर्म अधीन।
तद्यपि बुद्धि विचारिके, कारज करहु प्रवीन ॥ ६० ॥
आलस वैरी संत तन, सब सुखको हर लेत।
त्योंही उद्यम बन्धुसम, किये सकल सुख देत ॥६१॥

सोरठा–दान भोग अरु नाश, तीन होत गति द्रव्यकी।
नाहिं न द्वैको वास, तहां तीसरो वसत है ॥ ६२ ॥

छप्पय–महा अमोलिक रत्न जाहि रीझें सुर तिनसों।
महा हलाहल जानि प्राण डरपत नहिं जिनसों ॥
रहत चित्तकी वृत्ति एक अमृतसों अतिही।
तैसेही नर धीर काज निश्चय करि मतिही ॥
सब दोषरहित अरु गुणसहित ऐसे कारज मन धरत।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तिहको सुअर्थ अमृत लहत कोऊ दुखको नहिं करत॥६३॥

कुंडलिया—राजा निशि अरु दिवसको रवि शशि तेज निदान।
पांचों ग्रह इनसम नहीं तातें तजें पिरान॥
तातें तजें पिरान आन इनहीसों अकरत।
रह्यौ सीसको राहु चाह कर जब तब पकरत॥
ऐसेही नर धीर मरतहू करत सुकाजा।
गिरत परत रणमाहिं सुभट पहुँचत जहँ राजा॥६४॥
कंकनते सोहत न कर कुंडलते नहिं कान।
चंदनते सोहत न तन जानि लेहु यह जान॥
जानि लेहु यह जान दानतें पान लसति है।
कथाश्रवणतें कान परम शोभा सरसति है॥
परमारथसों देह दिपति चंदनसों टंकन।
यही सुकृत सब राखि पहिरिये कुंडल कंकन॥६५॥

दोहा—सबसों ऊंच सुखाव जन, जानत रसको सोत।
जिनके यशकी देहको, जरा मरण नहिं होत॥६६॥
भाल लिख्यो विधिना सुवह, घटै बढै कछु नाहिं।
सुरधर कंचन मेरुसम, जानि लेहु मनमाहिं॥६७॥
श्वान लेत लोयो लपकि, तापर करत गरूर।
सो कोदों भक्षण करत, वीर धीर गज पूर॥६८॥
धेनु धराको चहत पय, प्रजा वच्छकरि मानि।
याको परिपोषण किये, कल्पवृक्ष सम जानि॥६९॥

छप्पय—सांची है सब भांति सदा सब बात न झूठी।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कबहुँ रोगसों भरी कबहुँ प्रिय वैन अनूठी ॥
हिंसाको डर नाहिं दयाहू प्रगट दिखावत ।
धन लैवेकी वानि खरचहू धनको भावत ॥
राखत जू भीर बहु नरनकी सदा सँवारत रहत गृह ।
यह भांति रूप नाना रचत गनिकासम नृप नीति यह॥७०॥

दोहा—जे अतिपापी भूपते, काहूसों न कृपाल ।
हेम करतहू द्विजनको, दहत अग्निकी ज्वाल ॥ ७१ ॥
दयाहीन विन काज रिपु, तस्कर तापर पुष्ट ।
सहि न सकत सुख बंधुको, यह सुभावसों दुष्ट ॥ ७२॥
विधि विपत्ति दे नर वरण, करत धीरजहि दूरि ।
दूरि होत धीर जन ज्यों, प्रलय सिंधु गिरि पूरि॥७३॥
तियकटाक्षशर यतन बाचि, दहत न कोपहि आगि ।
लोभ पास खेंचत न मन, ते विरले रहैं जागि ॥७४॥

छप्पय—दियो जमावत नाहिं गये घर कर सत आदर ।
हितकर साधत मौन कहत उपचार वचनवर ॥
काहूको दुख होय कथा बहु कबहुँ न भाषत ।
सदा दानसों प्रीति नीति युत संपति राखत ॥
यह खड्गधार व्रत धारिके जे नर साधन मन वचन ।
तिनको सो वहां इहि लोकमें पूरि रह्यौ यशही रचन ॥ ७५ ॥

दोहा—क्षीण पत्र पल्लवित तरु, क्षीण चंद बढवार ।
सतपुरुषनकी विपति क्षण, संपति सदा अपार ॥७६॥
नम्र होत फलभार तरु, जल भरि नम्र घटायु ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ज्यों संपति करि सतपुरुष, नवें सुवासु छटायु ॥ ७७ ॥
धीरज गुण ढांक्यो चहै, नाहिं ढकत कोउ चाल ।
जैसे नीचो अग्निमुख, ऊंची निकसत झाल ॥ ७८ ॥
अप्रिय वचन दरिद्रता, प्रीतिवचन धन पूर ।
निज तियरति निंदारहित, वे महिमंडल सूर ॥ ७९ ॥
शशि कुमुदिनि प्रफुलित करत, कमल विकासत भानु ।
विन मांगत जल देत घन, ज्योंही सत्व सुजानु ॥८० ॥
बडो साहसी होय सो, काम करत झक झूमि ।
शूर वीर अरु शूर यह, लांघि जात रणभूमि ॥ ८१ ॥
गिरिते गिरि परिवो भलो, भलो पकरिवो नाग।
अग्निमाहिं जरिवो भलो, बुरो शीलको त्याग ॥ ८२ ॥

छप्पय–अग्नि होत जलरूप सिंधु डाबर पद पावत ।
होत सुमेरुहु सेर सिंहके स्यार कहावत ॥
पहुपमालसम माल होत विषहू अमृतसम ।
वनहू नगर समान होत सब भांति अनूपम ॥
सब शत्रु आय पांयन परत शत्रुहु करत प्रसन्नचित ।
जिनके सुपुण्य प्राचीन शुभ तिनके मंगल मोद नित॥८३॥

दोहा–वचन बानसम श्रवण सुनि, सहत कौन रिस त्यागि ।
सूरजपद परिहारतें, पाहुन उगलत आगि ॥ ८४ ॥

छप्पय–चाकरहू दश वीस नाहिं जो आज्ञा राखत।
जाति गोतके लोग कबहुँ भोजन नहिं चाखत ॥
अपनो निज परिवार होत है नाहिं मुदित मन

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

विप्रनहूको दान देनको मिलत नाहिं धन ॥
कछु कर न सकत हित मित्रको रंग राग नाह नृत्यगति।
ये छहूं बात जो नाहिं तौ कौन अर्थ सेवहु नृपति॥८५॥
कमलतंतुसों बांधि गजहि वश करत उमाहत ।
सिरस पहुँपके तार वज्रको वेध्यो चाहत ॥
बूंद सहतकी डारि समुदको पार मिटावत ।
तैसेही हित बैन खलनके मनहिं रिझावत ॥
वे नीच अपनपौ तजति न हिं ज्यों भुजंग त्यों दुष्ट जन।
पय प्याय सुनावत रागहु डसिवेहीमें मन रहत॥८६ ॥

दोहा—सज्जन मन वसि करनको, रची विधाता मौन ।
क्रूरनहूको आभरण, मौन महासुख भौन ॥ ८७ ॥
दुष्ट कर्म निशि दिन करत, कुलमर्यादसों हीन ।
संपति पावत नीच गण, होत विषय सुख लीन ॥ ८८॥

छप्पय—विद्या नरको रूप प्रगट विद्या सुगुप्त धन ।
विद्या सुख यश देत संग विद्या सुबंधु जन ॥
विद्या सदा सहाय देवताहू विद्या यह ।
विद्या राखत नाम लसत विद्याहीतें गृह ॥
सब भांति सबनसों अतिबडी विद्याको कविजन कहत।
शिवविष्णुहूं विद्याके वश करत नृपति न्याय विद्या चहत॥८९
सज्जनसों हित रीति दया परिजनसों भाखहु ।
दुर्जनसों शठभाव प्रीति संतनप्रति राखहु ॥
कपट खलनसों राखि विनय राखो बुधजनसों ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्षमा गुरुनसों राखि शूरता वैरीगणसों ॥
राखि धूर्तता तियनसों जो तू जग वसिवौ चहै।
अतिही कराल कलिकालमें इन चालनसों सुख लहै॥९०॥
करत करणतें दान शील गुरु चरणन राखत।
मुखसों बोलत सांच भुजनसों जय अभिलाषत ॥
चितकी निर्मल वृत्ति श्रवणमें कथा श्रवण रति।
निस दिन पर उपकार सहित सुंदर जिनकी मति ॥
वे विना साज संपति तऊ सोहत सकल सिंगार तन।
उनकोजु संग नित देहु प्रभु तौ यह सुधरै चपल मन॥९१॥
धरी धराको सीस शेष अति कर्‍यो पराक्रम।
शेष सहित सब भूमि कमठ धरि रह्यौ विना श्रम ॥
कमठ शेष अरु भूमिभार वाराह रह्यो धरि।
इन सबहिनको भार एक जलके आश्रित करि॥
इक इकसों विक्रम अधिकही करत बडे अद्भुत सुछति।
तिनके चरित्र सीमारहित अति विचित्र राखत सुवृति ॥९२
दोहा—पुण्य पराक्रम करि मिली, रहत भुजनके माँहि।
प्रौढा वनितासों विजय, छांड्यौ चाहत नाँहिं॥ ९३ ॥
करत नाँहिं उपदेश कछु, तऊ करौ संतसंग।
सतपुरुषनकी वातहू, देत चित्तको रंग ॥९४॥
कुडलिया—मैया लज्जा गुणनकी निज माया सम मानि।
तेजवंत तनको तजत याको तज तन जानि ॥
याको तज तन जानि सत्य व्रतवारेहू नर।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करत प्राणको त्याग तजत नहिं नेकु वचनवर ॥
सरणि आपनी राखि रह्यौ बहु दशरथ रैया।
राखी बलि हरिचन्द टेक यह यशकी मैया ॥१५॥

छप्पय—महाभूमिको भार कहा कछु पाहन लागत।
निशि दिन भटकत बानु कहा दुखमें नहिं पागत ॥
हारि रहत नाहिं सूर कमठहू भार न डारत।
तौ कैसे नर धीर वीर अपनाय विसारत ॥
जो लेत भार निज भुजनपर ताहि निवाहत हित सहित।
सतपुरुषनकौ कुल धरम यह संचित करि राख्यौ सुचित ॥१६॥

दोहा—सनमुख आये शत्रुको, जीत लेत धन धाम।
मरिवेहूमें स्वर्ग सुख, लहत वाम अभिराम ॥ १७ ॥

कुंडलिया—कामी कवि दोऊ भये औगुण गुणहि समान।
भोग दूरतें मन धरत कविगुण अर्थ बखान ॥
कविगुण अर्थ बखान मान कामी हित बोलत।
शब्द व्याकरण हीन तिन्हैं कवि कबहु न खोलत ॥
विषयी धरि पद मंद सुकविहु अमंद पदगामी।
दोषरहित कवि लोग भुजनभरि पकरत कामी ॥ १८॥

दोहा—जलधर जल वरषत अतुल, चातक बूंद जो लेत।
जेतौ जाके भाग्यमें, ताहि तितौही देत ॥ १९ ॥

छप्पय—करत उवटनो अंग न्हायके अतर लगावत।
चंदन चर्चित गात वसन बहु भांति बनावत ॥
पहिर फूलकी माल रतनके भूषण साजत।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

ये नहिं शोभा देत नेक बोलत जोहिं लाजत ॥
सबही सिंगारको सार यह वाणी वरषत अमृतझर।
तिंह सुनत सबनके मन हरत रझि रहत नित नृपतिवर॥१००॥

दोहा–नीतिमंजरी पढतही, प्रगट होति है नीति।
व्रजनिधिके परताप यह, करी प्रताप प्रतीति॥ १०१॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी वरिशाविरचिता नीतिमंजरीभाषा संपूर्णा ॥१॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

शृंगारमंजरी।

छप्पय–चन्द्रकलामय भांति कांति बहु भांतिनि वरषत।
जार्‌यो काम पतंग अंग विन भयो जु परसत॥
महामोह अज्ञान हृदयको तिमिर नसावत।
अपनो आतमरूप प्रगट कारि ताहि दिखावत॥
दुति दिपति अखंडित एकरस अद्भुत अतुलित अधिकवर।
जगमगात संतचित सदनमें ज्ञानदीप जय जयति हर॥१॥

दोहा–शुभ कर्मनके उदयमें, गृहतिय चित सब ठोर।
अस्त भये तीनों नहीं, ज्यों मुक्ताविन डोर॥ २॥
दीपक बरत विवेकको, तौलौं या चितमाहिं।
जौलौं नारिकटाक्षपट, पवन सपरसत नाहिं॥ ३॥
क्षीण लंक अरु पीन कुच, लखि तियके दृग तीर।
जे अधीर नहिं करत मन, धन्य धन्य वे धीर॥ ४॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

छप्पय–करत जो अभ्यास आप मन कसि कारि राख्यो।
परब्रह्मसों प्रीति प्रगट जिन यह सुख चाख्यो॥
तिनको तियके संग कहा मुख बात न ह्वै है।
कहा अधर मधुपान कहा लोचन छबि ह्वै है॥
मुखकमलश्वाससों गंध कह कहा कठिन कुचको परस।
परिरंभन चुंबन कहा जोगी जन मन एकरस॥ ५॥
कुंडलिया–पंडितजन जब कहत है तिय तजिवेकी बात।
करत वृथा बकवाद वह तजी नेक नहिं जात॥
तजी नेक नहिं जात गात छबि कनक वरणवर।
कमलपत्रसम नैन बैन बोलत अमृत झर॥
सोहत मुख मृदु हास अंग आभूषण मंडित।
ऐसी तियको तजैं कौन सो है वह पंडित॥ ६॥
छप्पय–हाथी मरनहार होत ऐसेहू सूरे।
मृगपतिवध करि सकें बके नहिं नेकहु पूरे॥
बडे बडे बलवंत वीर सब तिनके आगे।
महाबली यह काम जाहि देखत सब भागे॥
अभिमान भरे या मदनको मान मारि मेटैं अवधि।
नर धर्म धुरंधर वीर वे विरले या संसारमधि॥ ७॥
दोहा–रसमें त्योंही रोशमें, दरशत सहज अनूप।
बोलनि चलनि चितौनिमें, वनिता बंधनरूप॥ ८॥
नूपर किंकन किंकिनी, बोलत अमृत बैन।
काके मन वसिकरन हित, मृगनैनीके नैन॥ ९॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तीनि लोक तिहुँ कालमें, महा मनोहर नारि।
दुखहूकी दाता यही, देखो शोच विचारि ॥ १० ॥
कामिनि कसकति सहजमें, मूरख मानत प्यार।
सहज सुगंधित कुमुदिनी, भौंरा भ्रमित गँवार ॥ ११ ॥
अस्त्र कामको कामिनी, जो नहिं होतौ हाथ।
तो कहु सिर न नवावतौ, तप करि होत सनाथ ॥१२॥
वनमृगनिके देनको, हरे हरे तृण लेहु।
अथवा पीरे पानकौ, बीरा वधुवन देहु ॥ १३ ॥
यद्यपि नीरस निंद्य अति, युवतीजनको संग।
तऊ पुण्यते पाइये, महामनोहर अंग ॥ १४ ॥
नीच वचन सुनि अनख तजि, करहु काज लहि भेव।
कै तौ सेवौ गिरिवरहि, कै कामिन कुच सेव ॥ १५ ॥
सुनी औरहू बातपैं, मुख्य बात यह दोय।
कै तिय जोबनमें रमै, कै वनवासी होय ॥ १६ ॥
छप्पय—करि करि बांके नैन हाय तू हमें निहारत।
करत वृथाही खेद वादि तन वसन सँवारत ॥
हम वनवासी लोग बालपन खोयो वनमें।
तजी जगतकी आस कामना रही न मनमें ॥
तृणके समान जानत जगत मोह जल तोऱ्यौ तमकि।
आनंद अखंडित पाय हम रहे ज्ञानकी छाक छकि ॥१७॥
दोहा—का कारण डारत वयन, कमल नयन यह नारि।
मोह काम मेरे नहीं, तऊ न तियचित हारि ॥ १८ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

तृष्णा सिंधु अगाधको, कोउ न पावत पार।
कामिन जोवन हीनपर, प्यार न छोडत जार॥ १९॥
घटा चडी सिर मौर गिर, हरित भई सब भूमि।
विरही दृग डारें कहां, देखि रह्यो जिय घूमि॥ २०॥

छप्पय—अल्पसार संसार तहां द्वै बात शिरोमन।
ज्ञान अमृतके सिंधु मगन ह्वै रहै बुद्धि मन॥
नित्यानित्यविचारसहित सब साधन साधे।
कै यह प्रौढा नारि धारि उरमें आराधे॥
चैतन्य मदन अंकुश परसि सिसकत मसकत करत रिस।
रस मसकत सत विलसत हँसत इह विधिवत बहु दिवस निस॥ २१
पीन लंक कुच पीन नयन पंकजसे राजत।
भौंहें कमान चंद्रसों मुख छबि छाजत॥
मदगयंदसी चाल चलत चितवत चित चोरत।
ऐसी नारि निहारि हाथ पांडितजन जोरत॥
अतिहीं मलीन सब ठौर वह चित गति भरी अनेक छल।
ताको सुप्राणप्यारी कहत अहो मोहमहिमा प्रबल॥ २२
कबहुं भौंहको भंग कबहुं लज्जायुत दरसत।
कबहुँक ससकाति ससकि कबहुं लीलारस वरषत॥
कबहुँक मुख मृदु हास कबहुँ हित वचन उचारत।
कबहुँक लोचन फेरि चपल चहुँ ओर निहारत॥
छिन छिन सुचरित्र करि भरे कमल जिमि दशहुँ दिशि।
ऐसी अनूप नारी निरखि हर्षित रहियें दिवस निशि॥ २३॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करत चंद्रछबि मंद वदन अद्भुत छबि छाजत ।
कमलन विहसित नैन रैन दिन प्रफुलित राजत ॥
करत कनकद्युति हीन अंग आभा अति उमगत ।
अलकन जीते भौंर कुचन करि कुंभ किये हत ॥
मृदुता मरोरि मारे सुमन मुख सुवास मृगमदकदन ।
ऐसो अनूप तियहि रूप लखि छांह धूप नाहिं गिनत मन॥२४॥

दोहा—नहिं विष नहिं अमृत कहूं, एक तिया तू जानि ।
मिलनेमें अमृत नदी, बिछुरें विषकी खानि ॥ २५ ॥

छप्पय—करत चातुरी भौंह नयनहूं नचत चितैवो ।
प्रगटत चितको चाव चौपसों मृदु मुसिकैवो ॥
दुरति मुरति सकुचाति गात अरसात जँभावत ।
उझकत इत उत देखि चलति ठठकति छबि छावत ॥
यहैं आभूषण तियनके अंग अंग शोभा धरन ।
अरु येही शस्त्रसमान हैं युवतीजन मन मृग वध करन॥२६॥

दोहा—विहँसत वरषत फूलसे, दरसत ओप अलीक ।
परसतही मति गति हरति, रमणी अति रमणीक ॥२७॥
सुधि आये सुधि बुधि हरति, दरसत करत अचेत ।
परसत मन मोहित करति, यह प्यारी किंह हेत ॥२८॥

छप्पय—परम भरमको भौंर भवन है गूढ गरवको ।
अनुचित कृतको सिंधु कोश है दोस अरवको ॥
प्रगट कपटको कोट खेत अप्रतीत करनको ।
सुरपुरको बटमार नरक पुरद्वार करनको ॥

२

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह युवतियंत्र कौने रच्यौ महा अमृत विषसों भरचो।
थिर चर नर किन्नर सुर असुर सबके गर बंधन करचो ॥२९॥

दोहा–इन्द्री दम लज्जा विनय, तौलों सब शुभ कर्म ।
जौलों नारीनयनशर, छेदत नाहिं न मर्म ॥ ३० ॥
अधर मधुर मधुसहित मुख, हुतौ सबन सिर मौर ।
सो अब गर फलन सम, भयो औरसों और ॥ ३१ ॥

छप्पय–तौ असार संसार जोन संतोष न तजते ।
भीर भारके भरे भूखको भूलन भजते ॥
बुद्धि विवेक निधान मान अपने नहिं देते ।
हुकम विरानो राखि दुःख संपति नहिं लेते ॥
जो यह नहिं होती शशिमुखी मृगनैनी केहरि कटी ।
छबि जटी छटनि कसी छटी रसलपटी छूटी लटी३२॥
मृगनैनीके हाथ अरगजा चंदन लावत ।
छूटत फुहारे देख पुहुप शय्या विरमावत ॥
चारु चांदनी चंदवदन मारुतको ऐवो ।
बाजत वीन प्रवीण संग गायनको गैवो ॥
चांदनी उजरै महलकी निरखत चित गति हित ढरत ।
पुरुषनको ग्रीषम विषम मै ये मद नहिं विस्तरत॥ ३३॥
सब ग्रंथनके ज्ञानवान अरु नीतिवान नर ।
तिनमें कोउ एक होत मुक्त मारगमें तत्पर ॥
सबको देत वहाय बंक नयनी यह नारी ।
जाकी बांकी भौंह नचत अतिही अनियारी ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह कूंची कर्म कपाटकी खोलन कोउ कत फिरत।
जिनके न लगत मन दृगनमें ते भवसागरको तरत ॥३४॥
त्रिवली तरल तरंग लसत कुच चक्रवाक सम।
प्रफुलित आनन कंज नारि यह नदी मनोरम ॥
महाभयानक चाल चलत भवसागर सनमुख।
हाथ धरतही ऐंच जात जितको अपनी रुख ॥
संसारसिंधु चाहत तर्‌यो तौ तू यासों दूरि रहि।
जाको प्रवाह अतिही प्रबल नेक न्हातही जात बहि ॥३५
कान निरंतर गान तान सुनि वोही चाहत।
लोचन चाहत रूप रैन दिन रहत सराहत ॥
नाशा अतर सुगंध चहत फूलनकी माला।
त्वचा चहत सुख सेज संग कोमल तन बाला ॥
रसनाहू चाहत रहत नित खाटे मीठे चरपरे।
इन पंचन या परपंचसों भूपनको भिक्षुक करे ॥३६ ॥
सोरठा–जो नहिं होती नारि, तौ तरिवौ जगमें सुगम।
यह लांबी तरवारि, मारि लेत अधबीचही ॥ ३७ ॥
कुंडलिया–ऐरे मन मेरे पथिक तू न जाहु इहिं ओर।
तरुणी तन बन सघनमें कुच पर्वत वर जोर ॥
कुच पर्वत वर जोर चोर इक तहां वसत है।
... .
लूटि लेत सब साज पकरि कर राखत चेरे।
मूंदि नैन अरु कान भुल्यो तू कितको ऐरे ॥ ३८ ॥
छप्पय–यह जोवन धनरूप सदा सींचत सिंगार तर।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

क्रीडा रसको सोत चतुरता रत्न देत कर॥
नारी नयन चकोर चोपको चन्द विराजत।
कुसुमायुधको बंधु सिंधु शोभाको भ्राजत॥
ऐसो यह जोवन पायके जे नहिं धरत विकार मन।
ते धर्म धुरंधर धीर मति सूर शिरोमणि संत जन॥३९॥

इन्द्रिनके हित धाम कामको मित्र महावर।
नरक दुक्खको हेतु मोहको बीज मनोहर॥
ज्ञान सुधाकर सीस सजल सावनको बादर।
नाना विधि बकवाद करनको बडो बहादुर॥
सबही अघको मूल यह जोवन अकृतहींको कवच।
याविना और को करि सके सुंदर मुखपर स्याम कच

कहा देखिये जोग प्रियाको अति प्रसन्नमुख।
कहां सूंघिये शोधि श्वास सौगंध हरत दुख॥
कहा दीजिये कान प्राण प्यारीकी बातन।
कहा लीजिये स्वाद अधरके अमृत अघातन॥
परसिये कहा ताको सुतनु ध्यान कहा जोवन सुछबि।
सब भांति सकल सुखको सदन जानि सुयश गावत सुकवि४१

जातिहीन कुलहीन अंध कुत्सित कुरूप नर।
जराग्रसित कृश गात गलितकुष्ठी अरु पांडुर॥
ऐसोहू धनवान होय तौ आदर वाको।
अपनो गात बिछाय लेत रस सर्वस ताको॥
गनिक विवेककी वेलको कदन करनवारी निरखि।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

बचि रहे बडे कुलवंत नर रचत पचत मूरख हरखि४२

सोरठा—गनिकाके मृदु ओठ, को कुलीन चुंबन करै।
नट भट विट ठग गोठ, पीकपात्र है सबनको ॥ ४३॥

दोहा—गनिका कनिका अगिनकी, रूप समधि मजबूत।
होम करत कामी पुरुष, धन जोवन आहूत ॥ ४४ ॥
ऋतु वसंत कोकिल कुहुक, त्योंही पवन अनूप।
विरह विपतिके परतही, होत अमृत विषरूप ॥४५॥
बुद्धि विवेक कुलीनता, तबहीलों मन माहिं।
कामबाणकी अगिन तन, जौलों भव कति नांहिं॥४६॥
विधि हरि हरहू करत हैं, मृग नैनीकी सेव।
वचन अगोचर चरित गति, नयो कुसुमशर देव॥४७

कुंडलिया—कामिन मुद्रा कामकी सकल अर्थको देत।
मूरख वाको तजत हैं झूंठे फलके हेत ॥
झूंठे फलके हेत तजत दिनहींको डांडे।
गहिरे मूंडे मूंड वसन विन करि करि छांडे ॥
भगुवा करि करि भेष जटिल ह्वै जागत जामिन।
भीख मांगिके खात कहत हम छोडी कामिन॥४८॥

दोहा—कामकीर भवसिंधुमें, वंसी डारी नारि।
मीन नरनको गहि पचत, प्रेम अग्निको वारि ॥ ४९ ॥
मृगनयनी हँसि रहसिमें, हित वचनन सुख देत।
करत कामको उदित अति, कछु अद्भुत हरि लेत॥५०॥
केसरिसों अँगिया सनी, बनी नयनकी नोंक।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मिली प्राणप्यारी मनों, घर आयो सुरलोक ॥ ५१ ॥

कुंडलिया–केसरि चरचित पीनकुच ढरकत मुक्ताहार ।
नूपुर झनकत नचत दृग लचकत कटि सुकुमार ॥
लचकत कटि सुकुमार छुटी अलकें छबि छलके ।
मुरि मुरि मोरत गात जुरत बिछुरनसी पलके ॥
लचत हँसतसी भौंह फँसत चित निरखत वेसरि ।
अतुलित अद्भुत रंग अंगसी नाहिंन केसरि ॥५२॥

दोहा–कामिनको अबला कहत, ते मतिमूढ अचेत ।
इन्द्रादिक जीते दृगन, सो अबला किह हेत ॥ ५३ ॥
अरुण अधर कुच कठिन दृग, भौंह चपल दुख देत ।
सुथिर रूप रोमावली, ताप करत किहि हेत ॥ ५४ ॥
मनमें कछु बातन कछू, नैननमें कछु और ।
चितकी गति कछु औरही, यह प्यारी किह ठौर ॥५५॥
नारिनकी निंदा करत, ते पंडित मतिहीन ।
स्वर्ग गये तिनको सुनें, सदा अपसरा लीन ॥ ५६ ॥
नारि विरहिनी तरुतरें, बैठी शशि सौभागि ।
चंद्रकिरणको चीरसों, दूर करत दुख पागि ॥ ५७ ॥

छप्पय–विन देखे मन होय वाहि कैसे करि देखै ।
देखेते चित होत अंग आलिंगन सेखै ॥
आलिंगनते होत याहि तनमय करि राखै ।
जैसे जल अरु दूध एकरस त्यों अभिलाखै ॥
मिलि रहै तउ मिलिवौ चहत कहा नाम या विरहको ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

वरन्यों न जात अद्भुत चरित प्रेम पाठकी गिरहको॥५८॥
खुले केश चहुँ ओर फैल झूलनको वरषत ।
दश मद छाकें नैन दुरत उघरतसे दरसत॥
सुरत खेदके स्वेद कलित सुंदर कपाल गहि ।
करत अधर रसपान परत अमृतसमान लहि॥
ते धन्य धन्य सुकृती पुरुष जे ऐसे उरझे रहत ।
हितभरे रूप जोवनभरे दंपति सुख संपति लहत॥५९॥
कुंडलिया—जैहै नहिं जौ पथिक तू भादोंमें निज भौन ।
तौ तिय जिय तन पाय है करि जैहै वह गौन॥
करि जैहै वह गौन पौन पुरवाई आये ।
मोरनको सुनि शोर घोर घनके घहराये॥
देखत फूले फूल हूल हियरामें ह्वै है।
चपला चमकृत चाहि आहि करि करि मरि जैहै॥६०॥
दोहा—गेह गये कहा होय है, जो वह जीवत नाहिं ।
जीवत है तोऊ कहा, घटा उठी नभमाहिं॥ ६१॥
जो न होय सुख परसपर, विहरत सुरत समाज।
तौ वे दोऊ करत हैं, कामिन वाह न काज॥ ६२॥
छप्पय—नाना गुण गहि प्रगट करति अभिलाष लाजयुत ।
शिथिल होय धरि धीर प्रेमकी इच्छा करि उत॥
निर्भय रसको लेत सेज रण खेतन माहीं।
क्रीडामाहिं प्रवीन नारि सुकिया मनमाहीं॥
यह सुरति मांझ अतिही सुरत करत हेरत चित गति करैं।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कुलवधू कामिनी केलि करि कलह कामकी सब टरें॥६३॥

दोहा–जौलों नारी नयन ढिग, तौलों अमृत वेलि।
दूर भयेते जहर सम, लगत विरहकी सेलि ॥ ६४ ॥
मंत्र दवा अरु आपसों, वेद न मिटै न वैद।
कामबाणसों भ्रमत मन, कैसे मिट है कैद ॥ ६५ ॥
कामिन हुक्मी काम यह, नैन सैन प्रगटात।
तिन तिय जीत्यो मथि मदन, ताहि करत निज हात६६
अगिन भांति मणिचंद्रमा, जगमग जोति सिदार।
मृगनयनी कामिन विना, लगति सबै आँधियार ॥ ६७॥
चंद्रकांतिसम मुख लसत, नीलम केसहि पास।
पुष्परागसम कर लसै, नारी रत्नप्रकास ॥ ६८ ॥

छप्पय–केश राहुसम जानि चंद्रसो सोहत आनन।
द्वादशमें ह्वै अर्क नैन केतुहि अलकानन॥
मंद हास है शुक्र बुद्धिवानी कहि जानों।
सुरगुरु जानि उरोज करन मंगलहि बखानों॥
अति मंद चाल साई मंद मति महा मनोहर युवति यह।
सबही फलदायक देखियत जाकों सेवत नवों ग्रह॥६९॥

दोहा–भौंहैं कारी कुटिल अति, है नागिनी समान।
कसति लसति ऐसी मनों, फनकरि दौरति खान॥७०॥
अति अद्भुत कमनेत तिय, करमें बाणन लेत।
देखो यह विपरीत गति, गुणतें बांधे देत॥ ७१ ॥

छप्पय–अनुरागी जगमाहिं एक शंकर सरसाने।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

पार्वती अरधंग रहत निश दिन लपटाने ॥
वीतरागहू एक सिरी युत ऋषभदेववर ।
तजौ तियनको संग सदा तपहीमें तत्पर ॥
जब जीव और या जगतके मदन महा ठगके ठगे ।
नहिं विषयभोग नहिं जोगहू योंही डोलत डगमगे ७२॥

दोहा—विधिना द्वै अनुचित करी, वृद्ध नरन तन काम ।
कुच ढरकतहू जगतमें, जीवत राखी वाम ॥ ७३ ॥
जंत्र मंत्र औषधनतें, तजत सर्प विष लाग ।
हय कोहू उतरत नहीं, नारि नयनको नाग ॥ ७४ ॥
बिछुरनहीमें मिलन है, जो मनमाहिं सनेह ।
विना नेहके मिलनमें, उपजत विरह अछेह ॥७५॥
नारी नागिन नयनतें, डसत दूरि रहु मित्र ।
जतन करत ज्यों ज्यों चढत, यह विष बढत विचित्र ॥७६॥
क्यों तेरे मन चटपटी, शोभा संपति पाय ।
पुण्य पात्रको परखिके, करै क्यों न मन लाय॥७७॥

छप्पय—विरही जन मन ताप करन वन अँबवा मौरे ।
पिकहू पंचम टेरि हेरि विरही किये बौरे ॥
भौंर रहे भन्नाय पहुप पाडलके महकत ।
प्रफुलित भये पलास दशों दिश धौंसी दहकत ॥
मलिगिरिवासी पवनहू काम अगिन प्रज्वलि करत ।
विन कंत वसंत असंत ज्यों घेरि रह्यो यह नहिं टरत ॥७८

दोहा—दमकत दामिनि मेघ इत, केतकि पहुप विकास ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

मोर शोर निशि दिन करत, विरही जन मन त्रास ७९॥
नव तरुणी रतिमें चतुर, विजय कामको देत।
अद्भुत करत विलास यह, चितको चोरे लेत ॥ ८० ॥
कोकिलरव फूली लता, चैतचांदिनी रैन।
प्रियासहित निज महलमें, सुकृती करत सुचैन ॥ ८१॥
शशिवदनी अरु शरदशशि, चंदन पहुप सुगंध।
ये रसिकनके चित हरत, संतनके चित बंध ॥ ८२ ॥
महा अंधतम नभ जलद, दामिन दमकि दुरात।
हर्ष शोक दोउ करत तिय, कोन पियाढिंग जात॥८३॥

छप्पय—संयम राखत काम नयनहू काननचारी।
मुखहू माहिं पवित्र रहत द्विजगण सुखकारी॥
उरपर मुक्ताहार रहत निस दिन छवि छायो।
आननचंद उजास रूप उज्ज्वल दरसायो॥
तेरो तन तरुणी मृदुल अतिचलत चाल धीरजसहित।
सब भांति सतोगुणको सदन तऊ करत अनुराग चित ॥८४॥

दोहा—तबहीलों मन मान यह, तबहीलों भ्रूभंग।
जौलों चंदनसों मिल्यो, पवन न परसत अंग॥ ८५ ॥
पीन पयोधरको धरत, प्रगट धरत है काम।
पावस अरु प्यारी निरखि, हरषित होत तमाम॥८६॥
नभ बादर अवनीह ऋतु, कुटिल कदंब सुगंध।
मोर शोर रमणीक वन, सबको सुखसंबंध॥ ८७ ॥

छप्पय—महामाहमें शीत इतेपर जलधर वरसत।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

महलनि बाहर पांव परत नाहिं अतिही परसत ॥
कंप होत जब गात तबहि प्यारीसँग सोवत।
उठत अनंग तरंग अंगमें संग समोवत
रति खेद स्वेद छेदन करन जालरंध्र आवत पवन।
इहिभांति बितावत दुर्दिवसते सुकृती सुखके भवन॥८८॥
छके मदनकी छाक मुदित मदिराके छाके।
करत सुरत रणरंग जंग करि कछु दृग थाके॥
पौढि रहे लिपटाय अंग अंगनमें उरझे।
बहुत लगी जब प्यास तबहि चित चाहत सुरझे॥
उठि पियत राति आधी गये शीतल जल या शरदको।
नर पुण्यवंत फल लेत है निज सुकृतिहिकी फरदको ८९

दोहा—जिनके या हेमंत ना, तिया मत्त लिपटाति।
तिनको यमके सदनसी, लागति है यह राति ॥ ९० ॥

सोरठा—दही दूध घृत पान, वसन मजीठहि रंगके।
आलिंगन रतिदान, केसरि चरचि हेमंतमें ॥ ९१ ॥

छप्पय—विलुलित करत सुकेश नयनहू छिन छिन मूंदत।
वसनन ऐंचे लेत देह रोमांच न रूंदत॥
करत हृदयको कंप कहत मुखहूसों सी सी।
पीडा करतहि ओंठ बयारिहु मारसि रीसी॥
यह शीत कालमें तियनको अद्भुत गति धारत पवन।
निशि द्यौस दुरे दबके रहौ निज नारी संग निज भवन ॥ ९२ ॥
चुंबन करन कपोलन मुखहि सतकार करावत।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

हृदयमाहिं धसि जात कुचनपर रोम वरावत ॥
जंघनको थहरात वसनहूं दूर करत झुकि ।
लग्यो रहत सँग माहिं द्वारको रोकि रह्यो ढुकि ॥
यह शिशिर पवन विटरूप धरि गलिन गलिन भटकत फिरत ।
मिल रहे नारि नर घरनमें याकी भट भेरन तिरत ९३

दोहा— जो जाके मन भावतौ, ताकौं तासौं काम ।
कमलन चाहत चांदनी, विकसत परसत धाम ॥९४॥
वास कीजिये गंगतट, पाप निवारत वारि ।
कै कामिनकुच युगलको, सेवन करहु विचारि ॥९५॥
पहुपमाल पंखा पवन, चंदन चंद सुनारि ।
बैठि चांदनी जल लहरि,ज्येठ महिन पट धारि ॥९६॥
अधरनमें अमृत वसत, कुच कठोरता वास ।
यातें इनको लेत रस, उनको मर्दन त्रास ॥ ९७ ॥
जेते रोगी पथ्यको, खायों जानत नाहिं ।
तैसेही तियमुख निरखि, रुचि मानत मनमाहिं॥९८॥
महामत्त या प्रेमको, जब तिय करति उदोत ।
तब वाके छल बल निरखि, विधिहू कायर होत ९९॥
काहूके वैराग रुचि, काहूके रुचि नीति ।
काहूके श्रृंगार रुचि, जुदी जुदी परतीति ॥ १०० ॥
यह श्रृंगारकी मंजरी, पढत होत चित धीर ।
सुनत गुणत बांचत लिखत, हरत जगतकी पीर ॥१०१॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी वीरेशविरचिता श्रृंगारमंजरी संपूर्णा ॥ २ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

अथ वैराग्यमंजरी।

सोरठा—सर्व दिशा सब काल, पूरि रह्यो चैतन्य घन।
सदा एकरस चाल, वंदन वा परब्रह्मको ॥ १ ॥

कुंडलिया—पंडित मत्सरता भरे भूप भरे अभिमान।
और जीव या जगतके मूरख महा अजान ॥
मूरख महा अजान देखिके संकट सहिये।
छंद प्रबंध कवित्त काव्यरस कासों कहिये ॥
वृद्ध भये मनमाहिं मधुर वाणी गुणमंडित।
अपने मनको मारि मौन धरि बैठत पंडित ॥ २ ॥

छप्पय—या जगसों उतपत्ति भये जे चरित मनोहर।
ते सबही छिन भंग प्रगट यह पूरि रह्यो डर ॥
यज्ञादिकतें स्वर्ग गये तेहू डर मानत।
इन्द्र आदि सब देव अवधि अपनीको जानत ॥
फल भोग करत जे पुण्यको तिनको रोग वियोगभय।
दुखरूप सकल सुख देखके भये संतजन ज्ञानमय ॥ ३ ॥

भटको देश विदेश तहां फल कछुव न पायो।
निजकुलको अभिमान छांडि सेवा चित लायो ॥
सहि गारी अरु खीज हाथ झारत घर आयो।
दूरि करनहू दौरि स्वान ज्यों परघर खायो ॥
इहि भांति नचायो मोहितें बहिकायो दै लोभ लल।
अजहूं तोहि संतोष कहुँ तृष्णा तू पापिन प्रबल ॥ ४ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

खोदत डोल्यो भूमि गडीहू न पाई संपति।
धौंकत रह्यो पषान कनकके लोभ लगी मति॥
गयो सिंधुके पास तहां मुक्ताहू न पायो।
कौडी करनहिं लगी नृपनको सीस नवायो॥
साधे प्रयोग मशानमें भूत प्रेत वेताल सजि।
कितहू न भयो मनवांछित कछु अब तौ मोहिं तजि५॥
तजे खलनके वैन इतेपर नहीं रिझाये।
नैननको जल रोकि शून्य मन मुख मुसिकाये॥
देत नहीं कछु वित्त तऊ कर जोरि दिखाये।
करि करि चाव करोरि भोरही दौरत आये॥
सुनि आस प्यास तेरी प्रबल तू अति अद्भुत गति गहत।
इहि भांति नचायो मोहिं अब और कहा करिवौ चहत६
उदय अस्त रवि होत आयुको क्षीण करत नित।
गृह धंधेके माहिं समय बीतत अजान चित॥
आंखिन देखत जन्म जरा अरु विपति मरणहू।
तऊ डरत नहीं नेकु भयनहू नाहिं करनहू॥
जगजीव मोह मदिरा पियत छाके फिरत प्रमादमें।
गिर परत उठत फिर फिर गिरत विषयवासना स्वादमें७
फट्यो पुरानो चीर ताहि खेंचत अरु फारत।
छोटे मोटे बाल भूखही भूख पुकारत॥
घरमाहीं नहिं अन्न नारिहू निर्दय यातें।
भई महा जडरूप कछू मुख कढति न बातें॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

यह दशा देखि अर वरत चित जीभ थरथरत रुकत सुरु ।
अपने सुजरे या उदरहित देह कहै को सतपुरुष ॥ ८ ॥
भगी भोगकी चाह गयो गौरव गुमान सब ।
मित्र गये सुर लोक अकेले आप रहे अब ॥
उठत सुलकडी टेंक तिमिर आंखिनमें छायो ।
शब्द सुनत नहिं कान वचन बोलत बहिकायो ॥
यह वृद्धि तनकी तऊ चकित होता मरिवो सुनत ।
देखो विचित्र गति जगतकी दुखहूको सुखसों लुनत ९॥
विन उद्यम विन पाप पवन सर्पनको दीनो ।
तैसेही सब गैर घास पशुवनको कीनो ॥
जिनकी निर्मल बुद्धि तरन भवसागर समरथ ।
तिनकी दूबर वृत्ति हरत गुण ज्ञान ग्रंथ गथ ॥
विधि अवधि करींतें अति अधिक यातें नर पद घर फिरत ।
निस द्योस पचत तन मन तचत लचत रचत उरझत गिरत १०॥
विधिसों पूजे नाहिं पाय प्रभुके सुखकारी ।
प्रभुको धऱ्यो न ध्यान सकल भवदुखको हारी ॥
खोलें स्वर्गकपाट धर्महू करचो न ऐसो ।
कामिन कुचके संग रंग भरि रह्यो न तैसो ॥
हरि हाय हाय कीन्हों कहा पाय पदारथ नर जनम ।
जननी जोवन वन दहनको अग्निरूप प्रगटे सुहम॥ ११॥
भोगे रहे भरपूर आयु यह भुगति गई सब ।
तप्यो नाहिं तप मूढ अवस्था तपत भई अब ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

काल न कितहू जात वैस यह चली जात नित ।
वृद्धि भई नहिं आस वृद्धि वय भई छांडि हित ॥
अजहूं अचेत चित चेत करि देह गेहसों नेह तजि ।
दुख दोषहरण मंगलकरण श्रीहरिहरके चरण भजि॥ १२॥
क्षमा क्षमा विन कीन्ह विना संतोष तजै सुख ।
सहै शीत तप घाम विना तप पाय महादुख ॥
धरचो विवेको ध्यान खेदसे घर नहिं ध्यायो ।
तज्यो सकल संसार प्यार जब उन विसरायो ॥
मुनि करत काज सोई करें फल दीसत विपरीत अति ।
अब होत कहा चिंता किये अजहूं करि हरिचरणरति॥ १३॥
दोहा—सेत चिकुर तन दशनविन, वदन भयो जिमि कूप ।
गात सबै शिथिलित भये, तृष्णा तरुण स्वरूप ॥ १४ ॥
इक अँबरके टूकको, निशिमें ओढत चन्द ।
दिनमें ओढत ताहि रवि, तू कत करत छछन्द॥ १५॥
छप्पय—जैंवेवारे भोग कहा जो बहु विधि विलसे ।
सदा सर्वदा संग रहत नहिं काहू मिलसे ॥
तू तौ तजि है नाहिं आपु हीये उठि जैहै ।
तब ह्वै है संताप अधिक चित चिंता छैहै ॥
जो तजे आपु यह विषय सुख तौ सुख होय अनंत अति ।
दुस्तर अपार भवसिंधुके पार होत वह विमल मति ॥ १६॥
दुबरो कानों हीन श्रवणविन पूंछ नवाये ।
बूढो विकल शरीर वारिविन छार लगाये ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

झरत सीसमें राधि रुधिर कमि डारत डोलत।
क्षुधाक्षीण अति दीन गरे पट्ट कंठ कलोलत॥
यह दशा श्वान पाई तो कुतियनसों उरझत गिरत।
देखो अनीत या मदनकी मृतकनहूं मारत फिरत॥१७॥
भीख अन्न इकवार लोन विन खाय रहतहूं।
फटी गूदरी ओढि वृक्षकी छांह गहतहूं॥
घास पात कछु डांसि भूमिपर नितप्रति सोवत।
राख्यो तन परिवार भार ताको यह ढोवत॥
इह भांति रहत चाहत न कछु तऊ विषयबाधा करत।
हरि हाय हाय तेरे शरण आय परचौ इनसों डरत॥१८॥
कुच आमिषकी गांठि कनकके कलश कहत कवि।
मुखहू कफको धाम कहत शशिके समान छवि॥
झरत मूत्र अरु धात भरी दुर्गंध ठौर सब।
ताकों चंपक वेलि कहत रस रेलि ठेलि दव॥
यह नारि निहारी निंदत नवहिंके विषई बावरे।
याकों बढाय वाको विरद बोले बहुत उतावरे॥१९॥
जानत नाहिं पतंग अग्निको तेजमई तन।
गिरत रूपको देखि जरत अपने अविवेकन॥
तैसेही यह मीन मांसको लोभ लुभायो।
कंटक जानत नाहिं ज्याय वह कंठ छिदायो॥
हम जानि बूझि संकट सहत छांडि सकत नहिं जगत सुख।
यह महामोह महिमा प्रबल देत दुहुनको दोष दुख॥२०॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दोहा—भूमिशयन वलकल वसन, फल भोजन जलपान।
धन मद माते नरनको, कौन सहत अपमान॥ २१॥

छप्पय—भये जगतमें धन्य वीर जिन जगत रच्यो है।
काहू धारी सीस अजौ वह नाहिं लच्यो है॥
काहू दीनो दान जीति काहू वश कीनो।
भुवन चतुर्दशों भोग कह्यो काहू यश लीनो॥
एकसों एक अधिके भये तुम हौ तिनमें तुच्छ वित।
दश वीस नगरके नृपति ह्वै यह मदकी ज्वर तोहि कित॥२२॥
तुम पृथ्वीपति भूप भरे अभिमान विराजत।
हम पाई गुरु गेह विरद बल ताके गाजत॥
तुम धनसों विख्यात सुकवि गावत कछु पावत।
हम यशसों विख्यात रहत निशि द्योस पठावत॥
तुम हमहिं बीच अंतर बड़ो देखो शोचि विचारि चित।
एतेपर जो मुख फेरि हौ तौ हमको एकांत हित॥२३॥
छिनहूं छांडी नाहिं भोग भुगती वह भूपन।
कुलटासी यह भूमि लाभ मानत महीपमन॥
ताहूको इक अंगके सुअंगहिको पावत।
राखत हैं करि कष्ट दिवस निशि चहुँ दिशि धावत॥
आपनी ओरकी होत यह यातें पचि पचि रचि रहे।
दृढ ज्ञानी गोपीचंदसे बुरी जानिके बचि रहे॥ २४॥
इक मृत्तिकाको पिंड रहत जलमाहिं निरंतर।
सोहू सबही नाहिं तनकसौ ताहूमें डर॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

करत हजारन जंग भूप तव भोग करत वित।
मिटत आपनी प्यास दानको होत कहा चित॥
ऐसे दरिद्र दुखके भरे तिनहूसों जो चहत धन।
धिक्कार जन्म वा अधमको सदा सर्वदा लीन मन॥ २५॥

दोहा—नट भट विट गायन नहीं, नहिं वा दिनके माहिं।
कौन भांति भूपति मिलत, तरुणीहूं हम नाहिं॥ २६॥
ऐसेहू जगमें भये, मुंडमाल शिव कीन।
धनलोभी नर नवत लखि, तुमको मदज्वरलीन॥२७॥
भीख अशन अरु दिग वसन, भूमि शयन तस घाम।
अब मेरे इन नृपनसों, रह्यौ नाहिं कछु काम॥ २८॥

छप्पय—तुम अवनीके ईश ईश हमहूं वानीके।
तुम हो रणमें धीर वीर गाढे अति जीके॥
त्योंही विद्यावाद करत हमहूं नहिं हारे।
प्रतिपक्षीके मान मारि अपने विस्तारे॥
सब लोभी नर सेवते तुम्हें हमको शिष श्रोता भले।
तुमको न हमारी चाह तौ हमहूं हवातें उठि चले॥२९॥
जब हौं समझों नेकु तबहि सर्वज्ञ भयो हो।
जैसे गज मदमत्त अंधता छांडि गयो हो॥
जब सतसंगति पाय कछु कहौं समझन लाग्यो।
तबहि भयो अतिमूढ गर्व गुणको सब भाग्यो॥
ज्वर चढत बढत अतिताप ज्यों उतरत शीतल होत तन।
त्योंही मनको मद उतरिगो लियो शील संतोष धन॥३०॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दोहा—गयो मान जोवन रु धन, भिक्षुक जात निरास।
अब तौ मोको उचित यह, श्रीगंगातट वास॥ ३१॥
तूही रीझत क्यौं नहीं, कहा रिझावत और।
तेरेही आनंदतें, चिंतामणि सब ठौर॥ ३२॥
कुंडलिया—जैसे पंकजपत्रपर जल चंचल दुरि जात।
त्योंही चंचल प्राणहूं तजि जैहैं निज गात॥
तजि जैहैं निज गात बात यह नीके जानत।
तौऊ छांडि विवेक नृपनकी सेवा ठानत॥
निज गुण करत बखान निलजता उघरी ऐसे।
भूलि गयो सतज्ञान मूढ अज्ञानी जैसे॥ ३३॥
दोहा—नृपति सैन संपति सचिव, सुत कलत्र परिवार।
करत सबनको स्वप्न मन, मोह काल करतार॥ ३४॥
छप्पय—जो जनमे हमसंग सुतौ सब स्वर्ग सिधारे।
जो खेले हम संग काल तिनहूं कहँ मारे॥
हमहूं जरजर देह निकटही दरसत मरिवौ।
जैसे सरिता तीरवृक्षको तुच्छ उखरिवौ॥
अबहुँ न छांडत मोह मन उमगि उमगि उरझो रहत।
ऐसे अचेतके संगसों न्याय जगतको दुख सहत॥ ३५॥
बहुत रहत जिहिं धाम तहां एकहिको राखत।
एक रहत जिहिं ठौर तहां बहु तहिं अभिलाषत॥
फेर एकहू नाहिं करी तहां राज दुराजी।
कालीके सँग काल रची चौपरिकी बाजी॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दिन राति उभय पासा लिये इहि विधिसों क्रीडा करत।
सब प्राणी सोवत सार ज्यों मिलत चलत बिछुरत मरत॥ ३६॥
दोहा—तप तीरथ तरु नीर मन, विद्या बहुत प्रसंग।
कहा कहा मन रुचि करै, पायो तन क्षणभंग ॥ ३७॥
छप्पय—सर्प सुमनको हार उग्र वैरी अरु सज्जन।
कंचनमणि अरु लोह कुसुम शय्या अरु पाहन॥
तृण अरु तरुणी नारि सबनपै एकदृष्टि चित।
कहूं राग नहिं दोष कितहु न कहूं हित॥
ह्वैहै कब मेरी यह दशा गंगाके तट तप तपत।
रसभीने दुर्लभ दिवस ये बीतेंगे शिव शिव जपत॥ ३८॥
दोहा—ब्रह्मध्यान धरि गंगतट, बैठूंगौ तजि संग।
कबहूं वह दिन होयगौ, हिरण खुजावन अंग॥ ३९॥
जगके सुखसों दुखित ह्वै, भरि हैं ढरि हैं नैन।
कब रटि हौं तट गंगके, शिव शिव आरत वैन॥ ४०॥
ईश सीस तजि स्वर्ग तजि, गिरिवर तजे उतंग।
अवनी तजि जलधिहि मली, पदसों परसुख गंग॥ ४१॥
छप्पय—नदीरूप वह आस मनोरथ पूरि रह्यो जल।
तृष्णा तरल तरंग रोग हैं ग्राह महाबल॥
नाना तर्क विहंग संग धीरज तरु तोरत।
भ्रमर भयानक मोह सबनकों गहि गहि बोरत॥
नित वहत रहत चिंत भूमिपै चिंता तट अतिही विकट।
कढि गये पार जोगी पुरुष उन पायो सुख तत निकट॥ ४२॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दोहा–ऐसो मैं संसारमें, सुन्यो न देख्यो धीर ।
विषया हथिनी संग लग्यो, मनगज बांधे वीर ॥ ४३ ॥

कुंडलिया–छोटे दिन लागत तिन्हैं जिनके बहु विधि भोग ।
बीत जात विलसत हँसत करत सुरत संयोग ॥
करत सुरत संयोग तनकसे लागत तिनको ।
ते हैं सेवक दीन निपट दीरघ ह्वै विनको ॥
हम बैठे गिरिशृंग अंग याहीतें मोटे ।
सदा एकरस द्यौस लगत हैं बड़े न छोटे ॥४४॥

छप्पय–विद्यारहित कलंक ताहि चितमें नहिं धारी ।
धन उपजायो नाहिं सदा संगी सुखकारी ॥
मातपिताकी सेव शुश्रूषा नेक न कीन्ही ।
मृगनयनी नवनारि अंक भरि कबहुँ न लीन्ही ॥
योंही वितीत कीन्हों समय ताकत डोल्यौ काक ज्यों ।
लै भज्यो टूकपर हाथतें चंचल चोर चलाक ज्यों४५॥
बीत गयो सर्वस्व तरुण करुणा छाई हिय ।
विन सार संसार अंत परिणाम जानि जिय ॥
अतिपवित्र आरण्य शरदके चंदसहित निशि।
करि हों तहां वितीत प्रीतियुत निरखि दशों दिशि ॥
शिव शिव शंकर गवरिवर गंगाधर हर हर कहत ।
भव पार करण पशुपति चरण एक शरण यह चित चहत॥४६
तुम धनसों संतुष्ट हमहुँ हैं वृक्षवकलतें ।
दोऊ भये समान नैन मुख अंग सकलतें ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

जान्यो जात दरिद्र बहुत तृष्णा है जिनके ।
जिनके तृष्णा नाहिं बहुत संपति है तिनके ॥
तुमही विचार देख्यौ दृगनको निर्द्धन धनवंतको ।
युत पाप कौन निष्पापको असंत अरु संतको ॥ ४७ ॥

दोहा—सतसंगति स्वच्छंदता, दिना कृपणता भक्ष ।
जान्यों नहिं किहिं तप किये, यह फल होत प्रत्यक्ष॥४८॥

कुंडलिया—जैसे चंचल चंचला त्योंही चंचल भोग ।
तैसेही यह आयु है ज्यों घट पवन प्रयोग ॥
ज्यों घट पवन प्रयोग तरल त्योंही जोवन तन ।
विनसत लगत न वार गात ह्वै जात ओसकन ॥
देख्यौ दुस्सह दुक्ख देहधारिनको ऐसे ।
साधत संतसमाधि व्याधिसों छूटत जैसे ॥४९॥

छप्पय—भोजनको कर पट्ट दशों दिशि वसन बनाये ।
भखे भीखको अन्न पलंग पृथ्वीपर छाये ॥
छांडि सबनको संग अकेले रहत रैनि दिन ।
निज आतमसों लीन पीन संतोष छिनहिं छिन ॥
मनके विकार इंद्रीनको डारे तोरि मरोरि जिन ।
वे धन्य धन्य संन्यास धन किये कर्मनिर्मूल तिन॥५०॥

दोहा—नृपसेवामें तुच्छ फल, बुरी कालकी व्याधि ।
अपनो हित चाहत कियो, तू तौ तप आराधि ॥ ५१ ॥

सोरठा—विप्रनके घर जाय, भीख मांगिवो है भलो ।
बंधुनसों शिर नाय, भोजनहू करिवो बुरो ॥ ५२ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दोहा–विप्र शूद्र योगी तपी, सुपच कहत करि टोक ।
सबकी बातें सुनत हों, मोकों हर्ष न शोक ॥ ५३ ॥

छप्पय–प्रगट करत दुख दोष भरे विष विषय भोग सुख ।
इनसों परमुख होत होत सबही सुख सन्मुख ॥
ए रे चित्त चलाक चाल तेरी तू तजि रे ।
बैठि ज्ञानके गोख सुमति पटरानी सजि रे ॥
छिन भंग जगतकी ओर तू जिन ढरकावै मोहिं अब ।
संतोष सत्य श्रद्धासहित शम दम साधन साधि सब ५४ ॥

दोहा–वकल वसन फल अशन करि, करि हों मन विश्राम ।
जिन अविवेकी नरनकों, सुनियत नाहीं नाम ॥ ५५ ॥

छप्पय–मोह छांडि मन मीत प्रीतिसों चंद्रचूड भजि ।
सुरसरिताके तीर धीर धर दृढ आसन साजि ॥
शम दम भोग विराग त्याग तपको तू अनुसर ।
वृथा विषय बकवाद स्वाद सबही तू परिहर ॥
थिर नहिं तरंग बुदबुद तडित अगिनशिखा पन्नगसरित ।
त्योंही तन जोवन धन अथिर चल दल दलकेसे चरित॥५६॥
छहों रागिनी राग गुणी गावत हैं निशि दिन ।
कविजन पढत कवित्त छंद छप्पय छिनहीं छिन ॥
लिये दुहूं घा चोर करत ठाढी नव नारी ।
झनक मनक धुनि होत लगत काननकूं प्यारी ॥
जो मिलै तोहि यह सोज सब तो तू करि संसार रति ।
नहिं मिलै इतीहू तोयतें तौ साधन क्यों न समाधि गति॥५७॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सोरठा—तजि तरुणीसों नेह, बुद्धि वधूसों नेह करि ।
नरक निवारत एह, वही नरक ले जात है ॥ ५८ ॥

छप्पय—तजै प्राणकी बात और परधन नहिं राखै ।
परयुवतीको त्याग वचन झूठे नहिं भाखै ॥
निज हात न शुचि दान देत तृष्णाकों रोकत ।
दया सबनमें राखि गुरुनके चरणन ढोकत ॥
यह संमति है श्रुति स्मृतिको सबको सुखदायक सुभग ।
जे चलत धीरते धन्य हैं उनहीसों जगमगत जग ॥५९ ॥

दोहा—मोकों तजि भजि औरकों, अरी लक्ष्मी मात ।
हौं पलासके पातमें, मांग्यो सतुवा खात ॥ ६० ॥

छप्पय—महल महारमणीक कहा वसिवे नहिं लायक ।
नाहिं न सुनिवे योग कहा जो गावत गायक ॥
नव तरुणीके संग कहा सुखहू नहिं लागत ।
तौ काहेकों छांडि छांडिये वनको भागत ॥
इन जानि लियो या जगतके जैसे दीपक पवनमें ।
बुझि जात छिनकमें छबि भर्‍यो होत अँधेरो भवनमें॥६१॥

दोहा—नाहीं सब है प्रलय गति, कंद मूल फल फूल ।
जो मनमाते नृपतिकी, सेवा करत कबूल ॥ ६२ ॥
गंगातट गिरिवर गुफा, वहां कहा नहिं ठौर ।
क्यों एते अपमानसों, खात पराये कौर ॥ ६३ ॥
मेरु गिरत सूकत समुद, धरणि प्रलय ह्वै जात ।
चलदल केदलसीं चपल, कहा देहकी बात ॥ ६४ ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

एकाकी इच्छारहित, पाणि पात्र दिग वस्त्र ।
शिव शिव हौं कब होंउगौ, कर्म शत्रुको शस्त्र ॥ ६५ ॥
इन्द्र भये धनपति भये, भये शत्रुके साल ।
कल्प जिये तौऊ गये, अंतकालके गाल ॥ ६६ ॥
मन विरक्त हरिभक्तयुत, संगी वन तृण डाभ ।
याहूते कछु और है, परम अर्थको लाभ ॥ ६७ ॥
ब्रह्म अखंडानंदपद, सुमिरण क्यों न निसंक ।
जाके छिन संसर्गसों, लगत लोकपति रंक ॥ ६८ ॥
कुंडलिया—काढ्योते आकाशको पैठ्योते पाताल ।
दशों दिशामें तू फिरचो ऐसी चंचल चाल ॥
ऐसी चंचल चाल इते कबहूं नहिं आयो ।
बुद्धि सदनको पाय पाय छिनहूं न छुवायो ॥
देख्यो नहिं निजरूप कूप अमृतको छांड्यो ।
एरे मन मति मूढ बचो न भववारिध काढ्यो॥६९॥
वेही निशि वेही दिवस वेही तिथि वेहि वार ।
वे उद्यम वेही क्रिया वेही विषय विकार ॥
वेही विषय विकार सुनत देखत अरु सूंघत ।
वेही भोजन भोग जागि सोवत अरु ऊंघत ॥
महा निलज यह जीव मोहमें भयो विदेही ।
अजहूं पलटत नाहिं कढत गुण वेके वेही ॥ ७० ॥
छप्पय—पृथ्वीपर सुख नीत पलंग ताकों मन मान्यों ।
तकिया अपनो हात गगनको तंबू तान्यों ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

सोहत चंद चिराक बीजना करत दशों दिशि ।
वनिता अपनी वृत्ति संगही रहत दिवस निशि ॥
अतुलित अपार संपति सहित सोहति है सुखमें मगन ।
मुनिराज महा नृपराज ज्यों पौढे हम देखे दृगन॥७१॥

सोरठा–कहा विषयको भोग, परम भोग इक और है ।
जाके होत संयोग, नीरस लागत इन्द्रपद ॥ ७२॥

छप्पय–श्रुति अरु स्मृति पुराण पढे विस्तारसहित जिन।
साधे सब शुभ कर्म स्वर्गको वास लह्यौ तिन ॥
करत तहांहूं चाल कालको व्याल भयंकर ।
ब्रह्मा और सुरेश सबनको जन्म मरण डर ॥
ये वणिक वृत्ति देखी सकल अंत नहीं कछु कामकी ।
अद्वैत ब्रह्मको ज्ञान यह एक ठौर आरामकी ॥ ७३ ॥

जलकी तरंगसी जाति ज्यों जात आयु बीते यह ।
जोवनहू दिन चार चटककी चौंप चाह चह ॥
ज्यों दामिनी प्रकाश भोग सब जानहु तैसे ।
तैसेंही यह देह अथिर थिर ह्वै है कैसे ॥
सुनिये रे मेरे चित्त तू होय ब्रह्ममें लीन गति ।
संसार अपार समुद्र तरि करि नौका निज ज्ञानरति॥७४॥

दोहा–ज्यों सफरीको फिरत लखि, सागर करत न क्षोभ।
अंडासे ब्रह्मांडको, त्यों संतनको लोभ ॥ ७५ ॥
काम अंध जबही भयो, तिय देखी सब ठौर ।
अब विवेक अंजन किये, लख्यौ अलख सिर मौर॥७६॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

छप्पय—चंद चांदनी रम्य रम्य वन भूमि पहुपयुत।
त्योंही अति रमणीक मित्रको मिलवो अद्भुत॥
वनिताके मृदु बोल महारमणीक विराजत।
मानिन मुख रमणीक दृगन असुवन झुरसावत॥
एक परम रमणीक सब सब कोउ चित्तमें चहत।
इनको विनाश जब देखिये तब इनमें कछुव न रहत॥७७॥

सोरठा—ऊंच वृत्ति गति मान, समदृष्टी इच्छारहित।
करत तपस्वी ध्यान, कंथाको आसन कियो॥ ७८॥

छप्पय—अरी मेदिनी मात तात मारुत सुनि एरे।
जिते सखा जल भ्रात व्योम बंधू सुनि मेरे॥
तुमको करत प्रणाम हाथ तुम आगे जोरत।
तुम्हरेही सतसंग सुकृतको सिंधु झकोरत॥
अज्ञानजनित वह मोहहू मिट्यो तिहारे संगसों।
आनंद अखंडानंदको छाय रह्यो रस रंगसों॥ ७९॥

जौलों देह निरोग और जौलों न जरा तन।
अरु जौलों है बलवान आयु अरु इंद्रिनके गन॥
तौलों निज कल्याण करनको यतन विचारत।
वह पंडित वह धीर वीर जो प्रथम सम्हारत॥
फिर होत कहा जर्जर भये जप तप संयम नहिं बनत।
भवकाय उठ्यौ निज भवन जब तब क्यों करि कूपहि खनत८०

दोहा—विद्या पढी न रिपु दले, रह्यो न नारिसमीप।
जोवन यह त्योंही गयो, ज्यों सूने गृह दीप॥ ८१॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

छप्पय—मनके मनहीं माहिं मनोरथ वृद्ध भये सब ।
निज अंगनमें नाश भयो वह जोवनहू अब ॥
विद्या ह्वै गई वांझ बूझवोरे नहिं दीसत ।
दौरयो आवत कालको पकरि दशनन पीसत ॥
कबहुँ न पूजें प्रीतिसों चक्रपाणि प्रभुके चरण ।
भवबंधन काटै कौन अब अजहूं गहि रे हरिशरण ॥८२॥

प्यास लगै जब पान करत शीतल सुमिष्ट जल ।
भूख लगै तब खात भात घृत दूध और फल ॥
बढत कामकी आगि तबहि नववधू संग रति ।
ऐसे करत विलास होत विपरीत दैवगति ॥
तब जीव जगत्के दिन भरत खात पियत भोगहु करत ।
ये महारोग तीनों प्रबल विना मिटाये नहिं मिटत ॥ ८३ ॥

दोहा—नरसेवा तजि ब्रह्म भजि, गुरुचरणन चित लाय ।
कब गंगातट ध्यान धरि, पूजोंगौ शिवपांय ॥ ८४ ॥
पंकजनयनी शशिमुखी, सब कवि कहत पुकारि ।
ताकों हम ऐसे कहत, हाड मांसमय नारि ॥ ८५ ॥

छप्पय—अरे काम निष्काम धनुष टंकारत तरजत ।
तूहू कोकिल व्यर्थ बोल काहेको गजरत ॥
तैसेही तू मारि वृथा ये करत कटाछें ।
मोहि न उपजै मोह छोह सब रहिगे पाछें ॥
चित चंद्रचूडके चरणको ध्यान अमृत वरसत हितें ।
आनंद अखंडानंदको ताहि जगत सुख क्यों हितें॥८६॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

कंथा अरु कौपीन महा जरजर हैं जिनके ।
वैरी मित्र समान शंकहू नाहि न तिनके ॥
वनमशानमें वास भीख लावै तब खावै ।
सदा ब्रह्ममें लीन पीन संतोषहि पावै ॥
इहि भांति रहत धुनि ध्यानमें ज्ञान भानु जिनके उदित ।
निशि रहत अकेले एकरस वे योगी जगमें मुदित॥८७॥
अतिचंचल ये भोग जगतहू चंचल तैसो ।
तू क्यों भटकत मूढ जीव संसारी जैसो ॥
आशापाशी काटि चित्त तु निर्मल ह्वै रे ।
साधन साधि समाधि परम निज पदको छू रे ॥
करि रे प्रतीत मेरे वचन डारि रे तू इह औरको ।
क्षण यही यही दिनहू भलौ जिन राखे कछु भोरको॥८८॥
योगी जग विसराय जाय गिर गुहा वसत हैं ।
करत जोतिको ध्यान मगन आसूं वरषत हैं ॥
खग कुल बैठत अंक पियत निस्संक नयन जल ।
धनि धनि हैं वे धीर धर्यौ जिन यह समाधिबल ॥
हम सेवत बारी बाग सर सरिता वापी कूप तट ।
खोवत हैं योंही आयुको भये निपटही निघरघट ॥८९॥
ग्रस्यो जनमको मृत्यु जरा जोवनको ग्रास्यो ।
ग्रसिवेको संतोष लोभ यह प्रगट प्रकास्यो ॥
तैसेही समदृष्टि ग्रसित वनिता विलासवर ।
मत्सर गुण ग्रसि लेत ग्रसत वनकों भुजंग भर ॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नृप ग्रसित किये इन दुर्जनन कियो चपल धन सब ग्रसित।
कछुहू नहिं देख्यो विन ग्रसित यहीतें चित्त अतितृषित॥९०॥

दोहा–रोग वियोग विपत्ति बहु, देह आयु आधीन।
निडर विधाता जग रच्यो, महा अथिरता लीन॥ ९१ ॥
सह्योगर्भ दुख जन्मदुख, योवनतिया वियोग।
वृद्ध भये सबहिन तज्यो, जगत किधों यह रोग॥९२॥

छप्पय–शतहि वरसकी आयु रातमें बीतत आधे।
ताके आधों आधि वृद्ध बालकपन साधे॥
रहै यही दिन आधि व्याधि गृहकाज समोये।
नानाविधि बकवाद करत सबहिनको खोये॥
जलकी तरंग बुद्‌बुद सदृश देह खेहके जात है।
सुख कहो कहां इन नरनको जासों फूलत गात है॥९३॥

दोहा–बड़े विवेकी तजत हैं, संपति सुत पितु मात।
कंथा अरु कोपीनहू, हमसों तजी न जात॥ ९४ ॥
कुपति सिंहनी ज्यों जरा, कुपति शत्रु ज्यों रोग।
फूटै घट जल ज्यों तजत, तऊ अहितयुत लोग॥९५॥

सोरठा–देत औरको ज्ञान, तन धन जोवन अथिर कहि।
धरत न निजमन ध्यान, जगत रिझावत हम फिरत॥९६॥

दोहा–पढ़ि विद्या दृढ़ होत जब, सबही भांति सुछंद।
तबहिं तेहि नरको हरत, बडो विधाता मंद॥ ९७ ॥

छप्पय–है वह कच्छप धन्य धरी जिंह धरी न पीठपर।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

दूजो ध्रुवहू धन्य शूर शशि राखत परिकर ॥
वृथा जगतमें जन्म जीव निज स्वारथ सींचे।
परमारथके काज नाहिं ऊंचे नहिं नीचे ॥
वे जानत नहिं हित अहित करि प्रपंच पेटहिं भरत।
गूलरसे ब्रह्मांडमें मच्छरसे उपजत मरत ॥ ९८ ॥
छिनमें बालक होत होत छिनहीमें जोवन।
छिनहीमें धनवंत होत छिनहीमें निर्धन ॥
होत छिनकमें वृद्ध देह जर जरता पावत।
नट ज्यों पलटत अंग स्वांग नित नये दिखावत ॥
यह जीव नांच नाना नचत निचल्यौं रहत न एक दम।
करिके कनात संसारकी कौतुक निरखत रहत यम ॥९९॥
बहुत भोगको संग तहां इन रोगनको डर।
धनहूंको डर भूप अग्नि और त्योंही तस्कर ॥
सेवामें भय स्वामि समरमें शत्रुनको भय।
कुलहूमें भय नारि देहको काल करत छय ॥
अभिमान डरत अपमानसों गुण डरपत सुनि खलशबद।
सब गिरत परत भयसों भरे अभय एक वैराग्य पद॥ १००॥
दोहा—करी भरतरीशतक यह, भाषा भूप प्रताप।
नीत महल रस गोइये, वीतराग प्रभु आप ॥ १०१ ॥
श्रीराधा गोविंदके, चरण शरण विश्राम।
चंद्र महल चित चुहलमें, जयपुर नगर मुकाम॥ १०२॥

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

संवत् अष्टादश शतक, बावन्ना शुभ वर्ष।
भादों कृष्ण पंचमी, रच्यो ग्रंथ करि हर्ष ॥ १०३ ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई प्रताप-सिंहजी वीरेशविरचिता वैराग्यमंजरी संपूर्णा ॥ ३ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

श्रीवाल्मीकीयरामायणांतर्गत

सुंदरकांडभाषा.

पाठक महाशय ! भारत वर्षमें ऐसा पुरुष मिलना दुर्घट है जो कि भगवान् रामचंद्रजीको न जानता हो । और यहभी सबको मालूमही है कि सबोंसे पहिले रामायणरूपी कथा महर्षि वाल्मीकिजीने गाई है। अतएव उसको श्रीवाल्मीकीयरा-मायण कहते हैं । वह रामायण पाठकोंको चतुर्विध पुरुषार्थ देनेवालाहै। यह किसीसे नहीं छिपा। उसमेंभी विशेषकर परम पुरुषार्थको देनेवाला सुंदरकांड है । जैसे भारतमें गीता । ब्रह्मांडपुराणके एकसौ सैंतालीसवें अध्यायमें लिखा है कि "कांडस्य सुंदराख्यस्य श्रवणात् पठनादपि । मां प्राप्नुया ज्जगद्धेतुं नात्र संदेह इष्यते॥" भावार्थ—भगवान् कहते हैं कि, सुंदरकांडके पढने तथा सुननेसे जन जगत्कारणरूप मुझकोही प्राप्त होता है इसमें संदेह नहीं । उसका पाठ अर्थज्ञानपूर्व-कही होना उचित है । क्यों कि विना अर्थज्ञान पाठका फल अत्यल्पसे अत्यल्प शास्त्रमें कहा है । यह सोच मैंने ढाढोलि ग्रामस्थ श्रीयुत पं० काशीरामजीके द्वारा सरल सुबोध मूलार्थ भाषामें बनवायकर ग्लेज कागदपर वडे अक्षरोंमें शुद्ध छाप दिया है । जिसको आबालवृद्ध पाठ कर सके । और प्रति श्लोकमें गुप्तार्थभी गोविंदराजीय भूषणके अनुसार भावार्थरूपसे खोल दिया है । प्रति अध्यायके आद्यंत श्लोक लिखकर सब श्लोकांकभी लगा दिये हैं । ऐसे इस सर्वांगसुंदर पुस्तकको ले परमार्थ लाभ साध लेवें । की. २ रु. डांकमहसूलसहित ।

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi

पञ्चतन्त्र भाषाटीका.

पण्डितवर विष्णुशर्म्मा विरचित पञ्चतंत्र संस्कृतमें नीतिका एक ऐसा ग्रन्थ है जिसकी सारे संसारने पूजा की । अरबीमें कलेला दमना, फारसीमें अनुवारसुहेली, उर्दूमें बुस्ताने हिकमत आदि पुस्तकें उसी पञ्चतन्त्रका अनुवाद हैं । कहा जाता है कि नौशेरवां बादशाहने बडे परिश्रम तथा यत्नसे अपने मन्त्रीको भारतवर्षमें भेजकर पञ्चतन्त्रके अनुवाद कराके उसने अपनेको धन्य समझा । इसीका सार निकालकर संस्कृतमें हितोपदेश बनाया गया जिसका वङ्गभाषा आदि कितनीही भाषाओंमें अनुवाद मिलता है। हिंदीमेंभी कविवर लल्लूलालजीका किया हुआ अनुवाद है । मुरादाबादनिवासी पण्डित व्रजरत्नजी भट्टाचार्य्यनेभी हितोपदेशका भाषा अनुवाद किया परन्तु पञ्चतंत्रका हिंदी अनुवाद अबतक नहीं हुआ था । पं० व्रजरत्न भट्टाचार्य्यने मूल संस्कृतके साथसाथ सरल हिंदी अनुवाद रखकर पञ्चतंत्र तय्यार कर डाला । अब हिन्दी जाननेवालोंको भी इसके पढनेका अवसर मिला । यह पुस्तक घरघर रहने योग्य है । दाम २ रु० ।

संगीतसुधासागर.

हरिभक्त तथा रसिक सुजनोंके लिये आनन्द और अवलम्बदायक नवीन ग्रन्थ । जिसमें विनय तथा काव्योंके संग अनेकानेक प्राचीन और नवीन ग्रंथोंसे उत्तमोत्तम गानेवाली पदें, गीत, छंद और अनेकानेक प्रकारकी पहेली और कवित्त आदि संग्रह किया है—कीमत. १॥ रु०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण-मुंबई.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

नूतन पुस्तकें

संतानगोपालस्तोत्र ...	०—२
विवाहविचार	१
संकल्पकल्पना	०—८
वैतालचंद्रिका	०—४
समासकुसुमावलि	०—२
मूलोकरहस्य	०—४
धौम्यनीति भाषाटीका	०—४
मदनपालनिघंटु भाषाटीका	२—४
मूर्खशतक-निंदकनामा	०—४
आत्मबोध भा०टी०	०—४
श्रीपराशरस्मृति छोटी	०—३
षट्पंचाशिका भाषाटीका....	०—६
मुक्तिकोपनिषद् भाषाटीका	०—५
रामाश्वमेध अक्षर बडा मूल	२—८
जगन्नाथमाहात्म्य छोटा....	०—६
संगीत सुधानिधि द्वितिय भाग	०—३
भक्तिविलास	०—२
नैषधावतंस भाषाटीका	०—३
हितोपदेश भा० टी०	१—४
भोजप्रबंध भा० टी०	१—४
भैरवसहस्रनाम	०—२
संवत्सरफलदीपिका	०—३
काव्यमंजरी	१—८
नासिकेत भाषा वार्तिक....	०—४
मरहटासरदार और रौशनआरा औरंगजेबकी पुत्रीका प्रेम	०—७
बारामासीया लावणीसंग्रह	०—५
जीवनचरित्र तुलसीदासजीका	०—८
गूजरगीत मंगल....	०—५
सूर्यकवच	०—१
शिवकवच	०—१
ग्रहगोचरज्योतिष भा० टी०	०—२
जगन्नाथमाहात्म्य बडा ४९ अध्यायका	१—४
राधागोपालपंचाङ्ग	०—१२
वियोगवैराग्यशतक	०—१
मैत्रीधर्मप्रकाश भाषाटीका	०—४
पूरनमलभक्तका सांगीत	१—४
भजनसागर ग्लेज	१—०
" रफ....	०—१२
मासचिंतामणि भा० टी०	०—३
श्राद्धविधान भाषाटीका....	०—६
केवल गीता भाषाटीका पाकेटबुक	०—८
तर्कसंग्रह भाषाटीका	०—६
स्वरतालसमूह (सितारका पुस्तक)	१—८
हारीतसंहिता भाषाटीका...	३—०
बृहदवकहडाचक्र (होडाचक्र) भाषाटीका	०—४
राजवल्लभनिघण्टु भाषाटीका	१—८
गीतामृतधारा भाषा	०—८
भागवत भाषा खुलापत्रा....	६—०
लघुजातक भा० टी०	०—८
पद्मकोश भा० टी०	०—४
बीरबर अकबरका उपहास....	०—८
आल्हारामायण (आरण्यकांड)	०—६
भोजप्रबंध भाषा	०—१२
गोविंदगुणवृंदाकर	१—०
दिल्लगीकीपुडिया५भाग प्रत्येक भागकी कीमत	०—२
सूर्यकवच भा०टीका	०—१
आदित्यव्रतकथा भा०टी०	०—२

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण—मुंबई.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi

In Public Domain. Digitized by eGangotri and Sarayu Trust Foundation Delhi.

Padma Shri Rama Kant Shukla Collection at Deva Vani Parishad, Uttam Nagar New Delhi